

डॉ. डेविड बाउर, आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन, व्याख्यान 18, जेम्स 1:16-21

© 2024 डेविड बाउर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड बाउर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 18, जेम्स 1:16-21 है।

अब हम जेम्स अध्याय 1 के दूसरे भाग की ओर आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं, और यह निस्संदेह छंद 16 से 27 है।

इसके ऊपर, हम शीर्षक दे सकते हैं, वचन की वास्तविकता और संसाधनों के अनुसार जीना और वचन को करने और सुनने पर जोर देना। और यहां फिर से हमारे पास चार उपइकाइयाँ हैं जो चार पैराग्राफों के अनुरूप हैं, वैसे ही जैसे हमारे पास छंद 2 से 15 में चार पैराग्राफों के अनुरूप चार उपइकाइयाँ थीं। यह यहाँ शब्द की पहचान के साथ शुरू होता है जो 116 से 18 तक शब्द के चरित्र पर जोर देता है। .

और यहां वह एक सामान्य उपदेश के साथ शुरू करते हैं: मेरे प्यारे भाइयों, फिर से धोखा मत खाओ। यहां धोखा देने के लिए शब्द प्लेनो है। फिर वह आगे बढ़ता है और इस धोखे के बारे में विवरण देता है, जिसमें वास्तव में जिस बात पर उन्हें विश्वास नहीं करना है, इसमें धोखा शामिल होगा, और जिस पर उन्हें विश्वास करना है, के बीच एक अंतर्निहित विरोधाभास शामिल है।

उन्हें यह सोचकर धोखा नहीं खाना चाहिए कि ईश्वर प्रलोभन का स्रोत है। निःसंदेह उन्होंने श्लोक 13 में इसी पर जोर दिया है। इसलिए, धोखा न खाने का यह संदर्भ वास्तव में वापस जाता है, जैसा कि मैं कहता हूँ, यह गलतफहमी कि प्रलोभन की शुरुआत ईश्वर से होती है, यह एक पूर्ववर्ती बात है।

लेकिन साथ ही, जो कुछ आगे आता है उसके संदर्भ में उन्हें विश्वास नहीं करना चाहिए, यह मत सोचिए कि ईश्वर में कोई भिन्नता है। लेकिन श्लोक 17 और 18 के विपरीत, उन्हें क्या विश्वास करना चाहिए, दोनों सामान्य रूप से हमारे प्रति ईश्वर के संबंध में और फिर विशेष रूप से उस वचन के संदर्भ में जो ईश्वर ने हमें दिया है। सामान्य तौर पर, भगवान के उपहार, उन्होंने कहा, हर अच्छी बंदोबस्ती और हर उत्तम उपहार, संयोग से यहां के दायरे पर ध्यान दें, प्रत्येक, यह समावेशी दायरा है, बिना किसी अपवाद की अनुमति देता है, हर अच्छी बंदोबस्ती और हर उत्तम उपहार ऊपर से है, नीचे आ रहा है रोशनी के पिता से।

और यहाँ उन्होंने उल्लेख किया है, वे ईश्वर के चरित्र के अपरिवर्तनीय और अपरिवर्तनीय होने की बात करते हैं। और जैसा कि वह यहां कहते हैं, जिनके साथ परिवर्तन के कारण कोई भिन्नता या छाया नहीं है, और रोशनी के पिता, निश्चित रूप से, प्रकाश पर विचार करना अच्छा है। और फिर,

विशेष रूप से, न केवल देने वाला ईश्वर और अच्छा ईश्वर, बल्कि अधिक विशेष रूप से वह ईश्वर जो अपनी भलाई में वचन देता है।

परमेश्वर का एक विशिष्ट उपहार जो सत्य के वचन से जन्म देता है। अब, हम यहां धोखे के विषय के परिचय पर ध्यान देते हैं, जो छंद 16 से 27 में एक प्रमुख विषय और एकजुट करने वाला विषय होगा। उपदेश है, धोखा मत खाओ।

यह वास्तव में धोखा मानता है। यहां निषेध का स्वरूप सुझाव देता है कि उन्हें धोखा देना बंद कर देना चाहिए, कि एक धोखा है जो पहले से ही मौजूद है या कम से कम संभावित रूप से उनके भीतर काम कर रहा है। यह धोखा महज़ एक बौद्धिक भूल नहीं है।

यह एक गंभीर त्रुटि है, जो पाप के मूल में ही है। वास्तव में, जेम्स श्लोक 20 में अपने पत्र के अंत में एक बार फिर धोखा देने के लिए इस शब्द, प्लेनओ का उपयोग करेगा। खैर, वास्तव में, श्लोक 19 में, मेरे भाइयों, यदि आप में से कोई भी सत्य से भटक जाता है, तो प्लेनो, और कोई उसे लौटा लाए, तो वह जान ले कि जो कोई किसी भूले हुए पापी को लौटा लाएगा, वह उसके प्राण को मृत्यु से बचाएगा, और बहुत से पापों पर पर्दा डाल देगा, यहां तक कि यह धोखा, यह पाप पाप के समान दिखाई देगा।

प्रलोभन से पर्याप्त रूप से निपटने में असमर्थता के पीछे यह धोखा है। वास्तव में, इसलिए, सभी पापों के पीछे यही धोखा है। अब, धोखे की इस समस्या को रहस्योद्घाटन द्वारा संबोधित किया जाता है, जिसे जेम्स स्वयं प्रदान करता है, लेकिन जेम्स मुख्य रूप से शब्द के रहस्योद्घाटन की ओर इशारा करता है, विशेष रूप से सत्य के शब्द, जैसा कि वह इसका वर्णन करेगा, जो श्लोक 18 के अनुसार धोखे का मारक है।

अपनी इच्छा से, वह हमें सत्य के वचन के द्वारा सामने लाया। यह पद 16 में दिए गए धोखे के विपरीत है और धोखे का मारक है। फिर धोखे का कोई कारण या बहाना नहीं है।

हमें वचन की सच्चाई के प्रकाश में रहना है, क्योंकि यह परमेश्वर का वचन है, जो परमेश्वर की सच्ची गवाही देता है और विशेष रूप से उसकी संपूर्ण अच्छाई की गवाही देता है, जो वह कहता है और जो करता है दोनों के द्वारा। अब, धोखे का मुद्दा शब्द के संकीर्ण अर्थ में धार्मिक है। अर्थात्, इसका संबंध ईश्वर के सिद्धांत से और विशेष रूप से ईश्वर के उद्देश्य से है।

जेम्स समझता है कि यह अनिश्चितता या प्रश्न, ईश्वर की मंशा, सभी पापों के पीछे निहित है, जैसा कि हम कह सकते हैं, ईडन गार्डन में धर्मग्रंथों की गवाही के संदर्भ में। यह गहरा संदेह कि ईश्वर का इरादा अच्छा नहीं है और केवल हमारे लिए अच्छा है, जो कि ईश्वर ने किया है, यह नाग के मुख से आ रहा था, निस्संदेह, उत्पत्ति 3 में, कि ईश्वर की आज्ञा में गुप्त उद्देश्य हैं, कि वह वास्तव में यह आपको लाभ पहुंचाने के लिए है, आपका भला करने के लिए नहीं। अब, जेम्स ने तुरंत रिकॉर्ड सीधा कर दिया।

वह ईश्वर को रोशनी के पिता के रूप में संदर्भित करता है। यह व्यवसाय कि वह रोशनी का पिता है, ईश्वर की अच्छाई की ओर इशारा करता है। निःसंदेह, प्रकाश का उपयोग बाइबिल परंपरा में बुराई के विरुद्ध अच्छाई के संदर्भ में किया जाता है।

यह ईश्वर की अच्छाई की ओर इशारा करता है, लेकिन साथ ही, जब वह कहता है कि वह रोशनी का पिता है, तो यह प्रकाश का संचार करने की उसकी इच्छा की ओर इशारा करता है, यानी अपनी मानव रचना में अपनी अच्छाई का संचार करने की। जैसे एक पिता बच्चे पैदा करता है, वैसे ही रोशनी का पिता प्रकाश पैदा करता है, वैसे ही एक पिता खुद को प्राकृतिक प्रजनन में पुनः उत्पन्न करता है। तो, ईश्वर रोशनी का पिता है, जो स्वयं उस रोशनी को पुनः उत्पन्न करता है।

वह प्रकाश का संचार करता है, न केवल वह स्वयं प्रकाश है, बल्कि वह प्रकाश का संचार करता है। वह प्रकाशित करता है। वह अपनी सृष्टि को प्रकाश देता है।

वह अपनी मानव रचना को अच्छाई देता है। अब, ईश्वर को रोशनी के पिता के रूप में संदर्भित करके, जेम्स इंगित करता है कि ईश्वर प्रकाश है, कि वह सभी प्रकाश का स्रोत है। वह सभी अच्छाइयों का स्रोत है।

बेशक, यह उत्पत्ति 1 और वास्तव में पूरे पुराने नियम में चला जाता है, और वह यह है कि प्रकाश अच्छा है और अंधेरा बुरा है। इस प्रकार वह अच्छाई का प्रतीक है, जो बुरे अंधेरे पर खड़ा है, और प्रकाश के रूप में उसका चरित्र इस तथ्य में प्रकट होता है कि वह प्रकाशमानों का निर्माता, रोशनी का पिता, सितारों, सूर्य और चंद्रमा है। बहुवचन पर ध्यान दें, रोशनी के पिता।

इस प्रकार, भगवान के प्रकाश का चरित्र उन रोशनी में प्रतिबिंबित होता है जो उन्होंने बनाई हैं, न केवल वे प्रकाश हैं, बल्कि वे हमारे लिए प्रकाश का संचार करते हैं। फिर भी, यहां तक कि ये निर्मित प्रकाशक भी ईश्वर की अच्छाई को पर्याप्त रूप से व्यक्त नहीं करते हैं, क्योंकि वे अपने पाठ्यक्रम में सूर्य, चंद्रमा और सितारों की गतिविधियों की ओर इशारा करते हुए बदलते हैं, और उन्हें बदला जा सकता है, जो संभवतः ग्रहण की ओर इशारा करते हैं। इसीलिए वे वास्तव में ज्योतियों के पिता के संबंध में कहते हैं, जिनके साथ परिवर्तन के कारण कोई भिन्नता या छाया नहीं है।

वह स्पष्ट रूप से सूर्य, चंद्रमा और सितारों के पिता के रूप में ईश्वर और स्वयं प्रकाशमानों के बीच एक अंतर चित्रित कर रहा है, जो भिन्नता की विशेषता है। वे आकाश में कभी भी एक ही स्थान पर नहीं होते। वे लगातार अपने पाठ्यक्रम में आगे बढ़ रहे हैं ताकि वे बदल सकें; उनमें भिन्नता है और उनके कारण छाया है।

यानी; उन्हें ग्रहण के माध्यम से, ग्रहण की छाया के द्वारा बदला जा सकता है। इसके विपरीत, ईश्वर न तो बदलता है और न ही कोई या कोई चीज़ उसे बदलने का कारण बन सकती है। ईश्वर की हमेशा अच्छे उपहार देने की इच्छा से दूर होने का कोई मतलब नहीं है।

हर अच्छा और उत्तम उपहार उसी से आता है। यहां तक कि उपहारों को रोकना या हटा देना भी एक उपहार है, एक बेहतर भलाई है। निस्संदेह, जेम्स 4:3 में इसका उल्लेख करेगा। तुम मांगते

हो और तुम्हें नहीं मिलता क्योंकि तुम उसे अपने शौक पर खर्च करने के लिए गलत तरीके से मांगते हो।

इसलिए, जैसा कि मैं कहता हूँ, उपहार को रोकना भी ईश्वर का उपहार है। शायद नए नियम की सबसे मौलिक पुष्टि यह दावा है कि ईश्वर हमारे लिए है। वह पूरी तरह से हमारे पक्ष में है।'

यह ईश्वर से प्रेम करने का आधार है। श्लोक 12, धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में खरा उतरता है, क्योंकि जब वह परीक्षा में खरा उतरता है, तो उसे जीवन का मुकुट मिलेगा, जिसका वादा परमेश्वर ने उन लोगों से किया है जो उससे प्रेम करते हैं और वह ज्ञान से जाना जाता है, श्लोक 5 से 8, और भौतिक रूप से प्रकट होता है शब्द, श्लोक 18 से 27। अब, जेम्स एक विशिष्ट और उत्तम उपहार, अर्थात् सत्य के वचन का वर्णन करके प्रत्येक अच्छे और उत्तम उपहार को विशिष्ट बनाता है।

ध्यान दें कि आपके यहां विशिष्टता है। हर अच्छी बंदोबस्ती और हर उत्तम उपहार। वैसे, यहां हर उत्तम उपहार, डोज़ का यह व्यवसाय, देने की क्रिया की ओर इशारा करता है।

डोरेमा यहाँ का उपहार ही है। तो, देने का कार्य भी और उपहार भी। लेकिन फिर भी, आप सामान्य से विशेष की ओर आंदोलन को नोटिस करते हैं।

हर अच्छी बंदोबस्ती और हर उत्तम उपहार ऊपर से है। फिर वह आगे बढ़ता है और एक विशिष्ट उपहार के बारे में बात करता है जिसके लिए भगवान जिम्मेदार है, और वह वचन का उपहार है। अपनी इच्छा से, वह हमें सत्य के वचन के द्वारा सामने लाया।

वह प्रत्येक अच्छे और उत्तम उपहार का वर्णन करते हुए एक विशिष्ट अच्छे और उत्तम उपहार का वर्णन करता है, अर्थात् सत्य का वचन। ईश्वर द्वारा दिए गए सभी उपहारों में से, कुछ मायनों में, यह सबसे अच्छा है, क्योंकि यह मानव जाति को धोखे के सामने उसकी सबसे बुनियादी आवश्यकता, सच्चाई प्रदान करता है।

वह ईश्वर की सच्चाई के बारे में रहस्योद्घाटन है। यह अच्छा और उत्तम उपहार है जो हमें बताता है कि सभी अच्छे और उत्तम उपहार परमेश्वर की ओर से आते हैं। सत्य का यह वचन यहाँ जीवन के नये जन्म के साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

अपनी इच्छा से, वह हमें सत्य के वचन के द्वारा सामने लाया। इसलिए, यह नए जन्म का आवश्यक कारण है। नया जन्म केवल वचन के माध्यम से ही आ सकता है।

अब, वास्तव में, शब्द द्वारा जो नया जन्म प्राप्त होता है वह वास्तव में शब्द के चरित्र की ओर ही इशारा करता है। यह जीवन-उत्पादक है। यह शक्तिशाली है।

यह शब्द की शक्ति की ओर इशारा करता है। यह सत्य देने वाला है। अब, मैं, हालाँकि, और वास्तव में, इसलिए भी, वह सुझाव दे रहा है कि समग्र रूप से ईसाई जीवन शब्द-उन्मुख है।

इसे शब्द द्वारा आकार दिया गया है। यह शब्द द्वारा बनाया गया है, और इसलिए, इसे शब्द द्वारा आकार दिया गया है। अब, मैं वचन के माध्यम से नए जन्म के इस विवरण में दिए गए महत्वों पर ध्यान दूंगा।

सबसे पहले, भगवान की इच्छा. अपनी इच्छा से, उसने हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया। इस वाक्यांश में नए जन्म में भगवान की मंशा पर जोर दिया गया है।

अपनी इच्छा से, वह हमें सामने लाया। वचन के माध्यम से यह नया जन्म आकस्मिक नहीं है। यह मनमाना नहीं है.

यह ज़बरदस्ती नहीं है, बल्कि यह उसकी अपनी इच्छा के अनुसार है, संयोगवश, हमारी इच्छा के विरुद्ध है, श्लोक 14, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति तब प्रलोभित होता है जब वह अपनी इच्छा से प्रलोभित और प्रलोभित होता है। वैसे, आपके पास यहाँ अपोकुआओ शब्द की पुनरावृत्ति है, जिसका उपयोग यहाँ श्लोक 15 में किया गया है। तब इच्छा, जब वह गर्भ धारण करती है, पाप को जन्म देती है, और पाप, जब वह पूर्ण विकसित हो जाता है, तो मृत्यु को जन्म देता है।

लेकिन यहाँ, वे पद 18 में कहते हैं, इसका किस्सा यह है कि उन्होंने अपनी इच्छा से हमें उत्पन्न किया। फिर से, वही शब्द, जिसे वह जन्म देता है, उसने हमें सत्य के शब्द के द्वारा एक नया जन्म दिया है ताकि शब्द के द्वारा यह नया जन्म भगवान की गहरी इच्छा को प्रतिबिंबित करे।

क्या वह ईश्वर जो हमें नया जन्म देने की अपने भीतर इतनी गहराई से इच्छा रखता है, संभवतः किसी भी तरह से हमें नुकसान पहुँचाने की इच्छा कर सकता है? इसके अलावा, शब्द के माध्यम से नए जन्म के इस वर्णन में दूसरा जोर शब्द की शक्ति, नए जन्म की प्रक्रिया पर है। वह हमें पाप द्वारा मृत्यु के जन्म के विरुद्ध सामने लाया है। फिर, श्लोक 15 में भी वही शब्द प्रयोग किया गया है।

अपोकुआओ शब्द का प्रयोग किया गया है, जो आमतौर पर जन्म प्रक्रिया में माँ की भूमिका को संदर्भित करता है, यहां रोशनी के पिता, ईश्वर पिता का जिक्र है। लेकिन आमतौर पर, इसका उपयोग जन्म प्रक्रिया में माँ की भूमिका के रूप में किया जाता है। यहां विश्वासियों के नए जन्म और पद 15 में पाप के जन्म के बीच मौलिक अंतर को इंगित करने के लिए, जहां फिर से, उसी शब्द का उपयोग किया गया है।

ईश्वर की संतान होने के नाते, हमें ईश्वर के समान होना चाहिए, उनके स्वभाव और चरित्र, विशेष रूप से उनकी एकता और व्यापक अखंडता को प्रतिबिंबित करना चाहिए, और ईश्वर से प्रेम करना चाहिए। माता-पिता के संबंध में बच्चों की दो विशेषताएँ यहाँ सुझाई गई हैं। वह समानता और प्रेम है.

अब, वचन के माध्यम से इस नए जन्म के संदर्भ में तीसरा जोर नए जन्म के साधन, सत्य के वचन पर केंद्रित है। उन्होंने सत्य के वचन के माध्यम से हमें नया जन्म दिया है। सत्य का यह वचन संभवतः सुसमाचार है, संभवतः वही जो आपने मरकुस 1:15 में समझाया है। समय पूरा हो गया है.

स्वर्ग राज्य हाथ में है। परमेश्वर का राज्य निकट है। पश्चात्ताप करें और सुसमाचार पर विश्वास करें। समय पूरा हो गया है। परमेश्वर का राज्य निकट है। पश्चात्ताप करें और सुसमाचार पर विश्वास करें।

सत्य का यह वचन सबसे अधिक संभावना सुसमाचार है, वास्तव में, यीशु मसीह में विश्वास है जो अपने राज्य में लाता है। वह अध्याय 2, श्लोक 1 से 5 में इसका संदर्भ देगा। मेरे भाइयों, हमारे प्रभु यीशु मसीह, महिमा के प्रभु में विश्वास रखते हुए कोई पक्षपात मत करो। इसमें शामिल है, सत्य का वचन, जैसा कि मैं कहता हूँ, सुसमाचार है, जिसमें सुसमाचार द्वारा व्याख्या की गई कानून भी शामिल है, जिसे आप 2 :8 से 13 में शाही कानून और 1:25 में स्वतंत्रता का कानून कहेंगे। चूँकि सत्य का वचन नए जन्म का एक साधन था, यह ईसाइयों के जीवन में केंद्रीय शक्ति बना हुआ है।

यह येत्ज़र हारा का प्रतिकारक है, बुरी इच्छा जो प्रलोभन का आधार है और पाप और मृत्यु की ओर ले जाती है। सत्य का यह शब्द ईसाई के जीवन में एक केंद्रीय शक्ति है। यह येत्ज़र हारा का मारक है।

यह वह है जो, यहूदी धर्मशास्त्र के ढांचे में, इस इच्छा, इस अविभाज्य इच्छा को नियंत्रण में रखता है और इसे सीमा से बाहर जाने से रोकता है। सत्य के वचन के रूप में, यह किसी को धोखा देने से बचाने में सक्षम है। यह ज्ञान की ओर ले जाता है।

पद 19: हे मेरे प्रिय भाइयों, यह जान लो। अब, नए जन्म में भगवान का उद्देश्य यह है कि हम उनके प्राणियों का पहला फल बनें, जो हमें पूरे ब्रह्मांड के लिए उनकी मुक्ति योजना के केंद्र में रखता है। हमारा नया जन्म यह आश्वासन है कि ब्रह्मांड को बहाल और नवीनीकृत किया जाएगा।

हमारा नया जन्म संपूर्ण ब्रह्मांड की मुक्ति का आधार है। यह ब्रह्मांड में केंद्रीय है। यह ब्रह्मांड की मुक्ति के लिए महत्वपूर्ण है।

पहला फल होने की धारणा। सबसे पहले, कि हम, उसके रूप में पहला फल, परमेश्वर की अनोखी संपत्ति है। इस तथ्य पर विचार करें कि पुराने नियम में पहला फल परमेश्वर का है।

विशेष अधिकार होने के अर्थ में पहला फल, हमारे ऊपर परमेश्वर का विशेष दावा होना। और दूसरा, यह संपूर्ण पृथ्वी की पुनर्स्थापना के वादे की ओर इशारा करता है। संयोग से, रोमियों 8.23 में पॉल के कथन की याद दिलाते हुए, पूरी सृष्टि ईश्वर के पुत्रों के रहस्योद्घाटन की प्रत्याशा में पीड़ा या निराशा में कराहती है।

चूँकि ईश्वर ने हमें संपूर्ण ब्रह्मांड की पुनर्स्थापना में ऐसी केंद्रीय भूमिका दी है, यह समझ से परे है कि वह किसी भी तरह से हमें नुकसान पहुँचाने की इच्छा करेगा। वैसे, पुराने नियम में पहले फलों का एक अन्य कार्य यह था कि पहले फल आने वाली भलाई के वादे का प्रतिनिधित्व करते थे। अब, वह आगे बढ़ता है और शब्द की पहचान से आगे बढ़ता है, और अनुप्रास को क्षमा करता है, लेकिन अगर यह काम करता है, तो आगे क्यों न बढ़ें और इसका उपयोग करें, और यहां इसे मजबूर नहीं किया गया है, श्लोक 19 से 21 में शब्द का स्वागत।

हे मेरे प्रिय भाइयो, यह जान लो, हर एक मनुष्य सुनने में तत्पर, बोलने में धीरा, और क्रोध में धीमा हो, क्योंकि मनुष्य के क्रोध से परमेश्वर के धर्म का काम नहीं होता। इसलिये, सारी गंदगी और दुष्टता की वृद्धि को दूर करो, और नम्रता से उस अंतर्निहित वचन को ग्रहण करो जो तुम्हारी आत्माओं को बचाने में सक्षम है। शब्द ग्रहण करो, शब्द ग्रहण करो।

अब, वह यहां जनरल से शुरुआत करते हैं। वह कहता है, यह जान लो। फिर से, यह श्लोक 16 में, और फिर श्लोक 22 में, और फिर श्लोक 26 में धोखा दिए जाने के विरुद्ध है।

धोखा खाने के विपरीत, यह जान लें। वह यहां कहते हैं कि पहले उपदेश में ज्ञान शामिल है, इसे जानो, और निश्चित रूप से सत्य के शब्द से संबंधित है। ध्यान दें कि यह परिच्छेद यहाँ आगे की ओर इशारा करता है, और यह 3:1 से 4:12 तक, और संभवतः 5:9 और 5:12 की ओर भी इशारा करता है, और वहाँ विशिष्ट है।

यहाँ, दूसरे शब्दों में, जेम्स जीभ की संपूर्ण धारणा का परिचय देता है। वह कहते हैं, प्रत्येक व्यक्ति को समावेशी दायरे पर ध्यान देने दें। सभी लोग शीघ्रता से सुनें। अब, यह संभवतः संदर्भ में सुनने के लिए तत्पर होने के व्यवसाय को संदर्भित करता है, जो संभवतः शब्द को सुनना, शब्द को सुनना, शब्द को सुनने के लिए त्वरित होना, श्लोक 18, श्लोक 21, श्लोक 22 दोनों को संदर्भित करता है।

वास्तव में, वह पद 22 में कहेगा, वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही न बनो, जो अपने आप को धोखा देते हो, परन्तु मनुष्य की बातें सुनने में भी तत्पर हो। श्लोक 19 के शेष भाग में इसका सुझाव दिया गया है। प्रत्येक व्यक्ति को सुनने में तेज, बोलने में धीमा, क्रोध करने में धीमा होना चाहिए, जो निश्चित रूप से करना ही पड़ता है, विशेष रूप से अन्य मनुष्यों के साथ संबंध में, बोलने में धीमा, क्रोध करने में धीमा।

सभी लोग शीघ्रता से सुनें। जैसा कि मैं कहता हूँ, इसका तात्पर्य न केवल सत्य के शब्द को सुनना है, बल्कि उन चीजों के खिलाफ मानवीय शब्दों को सुनने में तत्पर होना है जो दूसरों को सच में सुनने में बाधा डालती हैं। जेम्स के अनुसार वे कौन सी चीजें हैं, जो दूसरों को सुनने, सच में सुनने में बाधा डालती हैं? खैर, एक बात के लिए, किसी की अपनी चिंताओं और उन्नति और महत्व के प्रति जुनून, 3.13 से 18 तक।

नीचे से यह ज्ञान जो इस परिच्छेद से संबंधित है, उस परिच्छेद में जुड़ा हुआ है, जैसा कि मैं कहता हूँ, अध्याय 3 और 4, भाषण से। साथ ही गुस्सा भी. यह तात्कालिक सन्दर्भ है.

हर कोई सुनने में तत्पर हो, क्रोध करने में धीमा हो। एक चीज़ जो दूसरों की बात सुनने में बाधक बनती है, वह है दूसरों के प्रति गुस्सा, जब किसी की चिंताएँ और आत्म-उन्नति खतरों में दिखाई देती है तो गुस्सा आना। वे कहते हैं कि आपके पास श्लोक 19बी से 20 में यह तात्कालिक संदर्भ में है, लेकिन साथ ही, वह इसे अध्याय 3, श्लोक 6 से 12 में और फिर 4:1 से 10 में भी बताते हैं।

मैं यहां सत्य के शब्दों को सुनने की प्रतिबद्धता और दूसरों के शब्दों के बीच संबंध पर ध्यान दूंगा। दूसरे शब्दों में, यह तथ्य कि हमारा नया जन्म, ईश्वर के साथ हमारा रिश्ता, शब्द द्वारा, शब्द सुनकर स्थापित होता है, आम तौर पर शब्द सुनने के महत्व की ओर इशारा करता है। सत्य के शब्द को सुनने का महत्व मानवीय शब्दों को सुनने के महत्व की ओर इशारा करता है।

वैसे, एक और चीज़ जो दूसरों की बात न सुनने का कारण बन सकती है वह है आलोचना का रवैया, 4:11 और 12. भाइयों, एक दूसरे के खिलाफ़ बुरा मत बोलो। जो अपने भाई की बुराई करता है, या भाई पर दोष लगाता है, वह व्यवस्था की बुराई करता है, और व्यवस्था पर दोष लगाता है।

परन्तु यदि तुम व्यवस्था का न्याय करते हो, तो व्यवस्था पर चलनेवाले नहीं, परन्तु न्यायी हो। लेकिन न केवल सुनने में तेज़, बल्कि ध्यान देने में भी, बोलने में धीमा। यह सुनने में शीघ्रता के विपरीत है।

सुनने में तेज़ लेकिन बोलने में धीमा। अब, यह ज्ञान निर्देश की विशिष्टता है, बोलने में धीमे होने का यह व्यवसाय। उदाहरण के लिए, आप इसे नीतिवचन 13.3 में और फिर नीतिवचन 29.20 में पाते हैं। लेकिन यह वास्तव में हेलेनिस्टिक के साथ भी जुड़ा हुआ है, जैसा कि मैं कहता हूँ, ग्रीको-रोमन पैरानेसस निर्देश के साथ।

वह स्टोइकिज़्म के संस्थापक ज़ेनो ही थे, जिन्होंने सबसे पहले बताया था कि भगवान ने इंसानों को दो कान और एक मुँह इस इरादे से दिया है कि हम जितना बोलते हैं उससे दोगुना सुनें। पाप के अवसर के रूप में जीभ के बारे में अध्याय 3 और 4 में विस्तार से बताया गया है। हम यहां धीमे बोलने के संबंध में इस निर्देश के कुछ प्रमुख जोर पर ध्यान दे सकते हैं। मुझे लगता है कि यहां उनके मन में तीन बातें थीं।

सबसे पहले, बोलने में धीमे होने के इस व्यवसाय में बोलने की मात्रा शामिल है। धीरे-धीरे बोलने के संबंध में यह निर्देश यह संकेत दे सकता है कि किसी को बहुत अधिक न बोलने के लिए सावधान रहना चाहिए, बल्कि शब्दों का संयम से उपयोग करना चाहिए। अब, मुझे लगता है, वास्तव में आप यहाँ एक गहन धार्मिक बात बता रहे हैं, और वह तथ्य यह है कि हम सत्य के वचन के माध्यम से नए जन्म का अनुभव करते हैं, जो हमें शब्दों को पवित्र मानने की ओर ले जाता है।

सत्य के वचन की पवित्रता मानव वाणी की पवित्रता, पवित्रता की ओर ले जाती है। तो फिर, मानवीय वाणी में सम्मान की दृष्टि से कुछ पवित्र है, या कम से कम मानवीय शब्दों में एक पवित्र छाया शामिल है जो दिव्य शब्द की पवित्रता को दर्शाती है। और इसलिए, हम सावधान रहते हैं कि बहुत अधिक बोलकर वाणी को अश्लील न बनाएं।

अब, यह एक ज़ोर है जो नए नियम में अन्यत्र पाया जाता है। वैसे, आप इसे जेम्स में कहीं और पाते हैं, एक बात। याकूब 3, 1 और 2 में ध्यान दें। हे मेरे भाइयों, तुम में से बहुत से लोग शिक्षक न बनें, क्योंकि तुम जानते हो कि हम जो सिखाते हैं, उन का न्याय अधिक कठोरता से किया जाएगा।

क्योंकि हम सब बहुत सी गलतियाँ करेंगे, और यदि कोई अपनी बात में गलती नहीं करता, तो वह सिद्ध मनुष्य है, और सारे शरीर पर भी लगाम लगाने में समर्थ है। जैसा कि हम देखेंगे जब हम जेम्स 3 की व्याख्या करेंगे, वह यहां जो संकेत दे रहा है वह यह है कि शिक्षण में एक व्यावसायिक खतरा शामिल है क्योंकि शिक्षण में आवश्यक रूप से शब्दों का उपयोग शामिल है, और बहुत अधिक भाषण के साथ एक वास्तविक खतरा है। लेकिन उदाहरण के लिए, मैथ्यू 12:36 में सुसमाचार परंपरा में भी यह आपके पास है।

आपको याद होगा कि यीशु कहते हैं, मैं तुमसे कहता हूँ न्याय के दिन, मनुष्य अपने द्वारा बोले गए हर लापरवाह शब्द, हर लापरवाह या निष्क्रिय शब्द का हिसाब देंगे। तो, चलिए बोलते हैं भाषण भाषण की मात्रा से संबंधित है। ज्यादा मत बोलो।

शब्दों का प्रयोग संयम से करें। लेकिन यह न केवल भाषण की मात्रा की ओर इशारा करता है, बल्कि, मुझे लगता है, भाषण के विचार-विमर्श की ओर भी इशारा करता है। यह निर्देश यह संकेत दे सकता है कि किसी को भी बोलने से पहले अच्छी तरह सोच-विचार कर लेना चाहिए।

बोलने में धीमे रहें। इसमें विशेष रूप से इस बात पर विचार करना शामिल होगा कि कोई व्यक्ति जो कहने जा रहा है उसका सत्य शब्द से क्या संबंध है। मैं जो कहने जा रहा हूँ उसका सत्य के वचन से क्या संबंध है? यह चिंता यहां विशेष रूप से प्रमुख प्रतीत होती है, अगले उपदेश पर ध्यान दें, बोलने में धीमे हैं।

मुझे यह कहना चाहिए कि मुझे लगता है कि यह चिंता यहां विशेष रूप से प्रमुख प्रतीत होती है, क्योंकि जैसा कि हम अगले उपदेश में कहने के लिए आगे बढ़ते हैं, क्रोध आदि के प्रति धीमे रहते हैं, और वह 3.1 से 4.12 में क्या कहने के लिए आगे बढ़ेंगे, और विशेष रूप से 3.9 और 10 में। यह धारणा, दूसरे शब्दों में, हमारे शब्दों का संबंध किस प्रकार है और क्या वे सत्य के शब्द के चरित्र के अनुरूप हैं। दूसरे शब्दों में, सत्य के शब्द का चरित्र ऐसा कैसे है कि यह जीवन को जन्म देता है, इसका परिणाम अच्छाई में होता है?

खैर, हमारे शब्दों का परिणाम अच्छाई और सकारात्मक प्रभाव होता है। क्या मैं जो कहने जा रहा हूँ वह मेरे दिल की गंदगी से उपजा है? बाद में इस पैराग्राफ में, वह सभी गंदगी को दूर करने और दुष्टता को बढ़ाने के बारे में बात करेंगे। तो, मकसद के संदर्भ में, स्रोत के संदर्भ में, क्या यह मेरे दिल के भीतर की गंदगी से उत्पन्न होता है? और प्रभावों के संदर्भ में, क्या यह ईश्वर की धार्मिकता की ओर ले जाता है या उसमें योगदान देता है? जैसा कि वह कहेगा, मनुष्यों का क्रोध, मानवीय क्रोध परमेश्वर की धार्मिकता का कार्य नहीं करता है।

तीसरी बात जो मुझे लगता है कि धीमी गति से बोलने के संदर्भ में शामिल है, वह यह है कि यह निर्देश यह संकेत दे सकता है कि किसी को बोलने से पहले रुकने की आदत डालनी चाहिए, इस प्रकार गुस्से के विस्फोट से बचना चाहिए। गुस्से के विस्फोट के संबंध में यह चिंता जेम्स में विशेष रूप से प्रमुख है क्योंकि वह यहां कहने के लिए आगे बढ़ेंगे, न केवल सुनने में तेज, बोलने में धीमे, बल्कि क्रोध करने में भी धीमे हैं, साथ ही गंदे उपयोग में क्रोध की भूमिका भी बताते हैं। अध्याय 3 और 4 में जीभ और जीभ का विनाशकारी उपयोग। अब, निस्संदेह, वह अगले उपदेश

की ओर आगे बढ़ता है, धीरे-धीरे क्रोध करता है, जिसका अर्थ यह हो सकता है कि निश्चित समय पर एक विशेष प्रकार का क्रोध उचित है। वह यह नहीं कहते कि कभी क्रोध मत करो, बल्कि क्रोध करने में धीमे रहो।

लेकिन जेम्स गुस्से वाले स्वभाव के खिलाफ बहस कर रहा है, जो जल्दी या आसानी से गलत कारणों से उकसाया या भड़काया जाता है और गुस्सा फूट पड़ता है। अब वह आगे बढ़ता है और इसकी पुष्टि करता है, क्योंकि वह कहता है, मनुष्य का क्रोध परमेश्वर की धार्मिकता का कार्य नहीं करता है। अर्थात्, मानवीय क्रोध धार्मिकता, पूर्णता और न्याय की वह स्थिति उत्पन्न नहीं करता है जो ईश्वर चाहता है और जिसे ईश्वर पृथ्वी पर स्थापित करने के लिए कार्य कर रहा है।

318, और मेल करानेवालोंके लिथे मेल के द्वारा धर्म की फसल बोई जाती है। यह भ्रामक धार्मिक आक्रोश और ईश्वर के कार्य की रक्षा या उसे आगे बढ़ाने के तरीके के रूप में क्रोध और गुस्से के विस्फोट को उचित ठहराने के सभी प्रयासों के खिलाफ है। किसी को यह कभी नहीं सोचना चाहिए, जेम्स जोर देकर कहते हैं, किसी को यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि ईश्वर के धर्म उद्देश्य को क्रोधपूर्ण भाषण जैसी नीच, दुर्भावनापूर्ण और हिंसक चीज़ से आगे बढ़ाया जा सकता है।

यह, निश्चित रूप से, मूल्यांकन अनुप्रयोग के संदर्भ में, आधुनिक मूल्य प्रणाली के खिलाफ खड़ा है जो आत्म-अभिव्यक्ति और विशेष रूप से क्रोध की अभिव्यक्ति को विशेषाधिकार देता है, जिसे अक्सर रेचन की मनोवैज्ञानिक धारणा से बल मिलता है, जैसा कि मैं कहता हूँ, शुद्धिकरण की यह धारणा या शुद्धिकरण की धारणा अभिव्यक्ति। वह दमन बहुत बड़ी बुराई है। अभिव्यक्ति अपने आप में एक मूल्य है, एक अच्छाई है।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि जाहिरा तौर पर क्या व्यक्त किया जा रहा है, इसे व्यक्त करना महत्वपूर्ण है। ये वाकई बहुत आम है। मुझे कई साल पहले इंडियाना के एक चर्च में जेम्स पर पढ़ाना याद है, और हम इस अनुच्छेद के बिंदु पर थे। वहां एक आम आदमी था, एक आदमी, जिसने धीरे-धीरे गुस्सा करने की इस पूरी बात पर गंभीरता से आपत्ति जताई और जोर देकर कहा कि यह एक रेचक और इसे रोके रखने आदि के खिलाफ गुस्सा व्यक्त करने के लिए एक अच्छी और स्वस्थ और उपयोगी चीज थी।

मुझे याद है कि मैं मन ही मन सोच रहा था, मैं शर्त लगा सकता हूँ कि तुम यहाँ एक वास्तविक समस्या हो। और बाद में पादरी से बात करने पर मुझे पता चला कि वास्तव में मामला यही था। अब, वह पद 21 में और उपदेशों के साथ आगे बढ़ता है।

इसलिए, वे कहते हैं, छंद 19 और 20 में उन्होंने जो कहा है उसके आधार पर कारण पर ध्यान दें, इसलिए सभी गंदगी और दुष्टता की वृद्धि को दूर करें, वह नकारात्मक और फिर सकारात्मक है, नम्रता के साथ उस प्रत्यारोपित शब्द को ग्रहण करें जो आपको बचाने में सक्षम है आत्माओं। तो, वह तब उतारो और पहनो की भाषा का उपयोग करता है, यहां नकारात्मक रूप से सारी गंदगी उतार देता है। इससे यह संकेत मिल सकता है कि जीभ के पाप गहरी नैतिक समस्याओं की अभिव्यक्ति हैं।

निःसंदेह, वह अध्याय 3 में इस मामले को स्पष्ट करने जा रहा है। इसलिए, वह यहां कहता है, गुस्से के विस्फोट के इस व्यवसाय के पीछे मौजूद सभी गंदगी को दूर कर दें। इसलिए, आप समावेशी दायरे, सारी गंदगी और संबंध पर भी ध्यान दें। इसलिए, यह इंगित करता है कि इस गंदगी में व्यक्तियों के प्रति सभी दुर्भावनापूर्ण और विनाशकारी दृष्टिकोण शामिल हैं, खासकर क्रोध।

ध्यान दें कि यहां इस्तेमाल किया गया शब्द मुख्य रूप से यौन या कामुक नहीं है, क्योंकि हम स्वचालित रूप से गंदगी के संदर्भ में सोचते हैं। यहां इसका उपयोग मुख्य रूप से यौन या कामुक तरीके से नहीं किया गया है, बल्कि मुख्य रूप से गुस्से वाले भाषण को संदर्भित करता है और जो गुस्से वाले भाषण को जन्म देता है। गंदगी शब्द अयोग्यता और इस प्रकार अनुपयोगिता और अलगाव की ओर इशारा करता है।

निःसंदेह, गंदगी का यह व्यवसाय स्वच्छता या साफ-सुथरे रहने की धारणा के विरुद्ध है और वास्तव में पंथ से उत्पन्न होता है। यह पंथ के दायरे, पुराने नियम के पंथ से उपजा है। और, निस्संदेह, पुराने नियम की सांस्कृतिक भाषा के संदर्भ में गंदगी से शुद्ध होने का अर्थ है मंदिर, तम्बू में भगवान की पूजा के लिए, भगवान की पूजा के लिए, भगवान की सेवा के लिए उपयुक्त बनाया जाना, इसलिए शुद्धिकरण और स्वच्छता का यह व्यवसाय, भगवान की पूजा, भगवान की सेवा और भगवान के साथ संगति के लिए पुजारियों और उसके जैसे लोगों की सफाई।

तो, मलीनता शब्द अयोग्यता और ईश्वर से अलगाव की ओर इशारा करता है। यह इस सांस्कृतिक जोर को दर्शाता है कि अस्वच्छता व्यक्ति को ईश्वर की पूजा से, ईश्वर की सेवा से और ईश्वर के समुदाय से अलग कर देती है। उन्होंने यहां दुष्टता की अधिकता या शेष को दूर करने का भी उल्लेख किया है।

वास्तव में इसका अनुवाद करना कठिन है। इसे संभवतः बुराई के हर अंश के अर्थ में समझा जाना चाहिए। अब, ध्यान दें कि वह यहां ईसाइयों से बात कर रहे हैं।

मेरे प्यारे भाइयों, यह जान लो। वह उन ईसाइयों से बात कर रहा है जो सत्य के वचन के द्वारा सामने आये हैं। उसने अपनी इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया।

इसका तात्पर्य यह है कि दुष्टता किसी न किसी रूप में और कुछ हद तक उन लोगों के जीवन में मौजूद रहती है या कम से कम मौजूद रह सकती है जो सत्य के शब्द द्वारा सामने लाए गए हैं। यह हृदय में पाप के बने रहने के ईसाई सिद्धांत की ओर इशारा करता है। लेकिन इसका तात्पर्य यह भी है कि ऐसी बुराई को पूरी तरह से दूर किया जा सकता है, वह कहते हैं, सभी गंदगी और बुराई के हर निशान को दूर किया जा सकता है।

और अधिक सकारात्मक रूप से, प्राप्त करें, यही वह है जिसे आपको टालना है, अब इसे बदलने के लिए, नम्रता के साथ प्रत्यारोपित शब्द को सकारात्मक रूप से प्राप्त करें जो आपकी आत्माओं को बचाने में सक्षम है। अब, ध्यान दें कि हमारे पास पुट-ऑफ़ है, यहां स्कीमा लगाएं। यह नये नियम की पत्रियों में अक्सर पाया जाता है।

प्रतिस्थापन का सिद्धांत काम कर रहा है, संभवतः बपतिस्मा के अभ्यास से जुड़ा हुआ है जिसमें व्यक्ति बपतिस्मा के पानी में जाने पर अपने पुराने वस्त्र और अपने गंदे कपड़े उतार देते थे और बाहर आने पर नए साफ कपड़े पहनते थे। वास्तव में, वह अध्याय दो के श्लोक दो में कपड़ों के बारे में बात करते हुए उसी शब्द, गंदगी का उपयोग करता है। क्योंकि यदि कोई सोने की अंगूठियां और सुन्दर वस्त्र पहिने हुए तेरी सभा में आए, और कोई कंगाल मैले-कुचैले वस्त्र, अर्थात् मैला वस्त्र पहिने हुए तेरी सभा में आए।

लेकिन हमारे पास है, इसलिए दूसरे शब्दों में, यदि उसके मन में यही है, तो अपने बपतिस्मा के अनुसार जिएं। लेकिन हम यहां प्राप्त और प्रत्यारोपित के बीच तनाव पर ध्यान देते हैं। तनाव पर ध्यान दें.

प्रत्यारोपित शब्द को नम्रता से स्वीकार करें। आखिरकार, यदि इसे प्रत्यारोपित किया गया है, तो यह आपके भीतर ही है। आपको इसे प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है, है ना? अब, मैं ऐसा सोचता हूं, लेकिन मुझे लगता है कि इस तनाव का समाधान इस मान्यता से हो जाता है कि हमारे पास संभवतः सांकेतिक और अनिवार्य के बीच एक संबंध है। इसे प्रत्यारोपित किया जाता है.

कहने का तात्पर्य यह है कि यह प्राकृतिक है, यह जन्मजात है, यह हमारे स्वभाव का हिस्सा बन गया है। वास्तव में, यह हमारी आत्मा का, वास्तव में, हमारे आवश्यक व्यक्तियों आदि का हिस्सा बन गया है। लेकिन हम वही हैं.

हम वचन के लोग हैं। हमें मोल लिया गया है, और हमें वचन के द्वारा नया जन्म दिया गया है। लेकिन, इसलिए इसे प्रत्यारोपित किया गया है, लेकिन हमें वह प्राप्त करने की आवश्यकता है जो हमारे पास पहले से ही है।

हमें उसे अपनाने की जरूरत है जो हम पहले से ही हैं। आपके पास शब्द है। यह आपका हिस्सा बन गया है.

अब, इसे गले लगाओ. अब, इस पर कार्रवाई करें. निःसंदेह, यह श्लोक 22 के लिए तैयारी करता है: वचन पर चलने वाले बनो, न कि केवल सुनने वाले।

वास्तव में, वास्तव में, नम्रता के साथ प्रत्यारोपित शब्द को प्राप्त करना अनिवार्य रूप से श्लोक 22 द्वारा परिभाषित किया गया है, शब्द के कर्ता-धर्ता हैं न कि केवल सुनने वाले। खैर, यह 1:22 से 25 तक ले जाता है, जो शब्द की आवश्यकता को संदर्भित करता है, जिसे हमने अभी उद्धृत किया है: शब्द पर चलने वाले बनो, न कि केवल सुनने वाले, जो स्वयं को धोखा देते हैं। यह वास्तव में देखने के लिए एक अच्छी जगह है क्योंकि हम यहां अपने वीडियो के अगले खंड में आगे बढ़ रहे हैं।

तो, आइए बस यहीं रुकें और फिर अगले खंड के साथ यहां से शुरुआत करें।

अब हम जेम्स अध्याय 1 के दूसरे भाग की ओर आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं, और यह निस्संदेह छंद 16 से 27 है।

